3.3. क्रिप्टोकरेंसीज के विकास के लिए जिम्मेदार कारक

- ऐसी संगणन क्षमता का विकास जो ऐल्गोरिदम प्रोग्राम के माध्यम से करेंसी जारी करना संभव बनाती हैं।
- सरकारों के प्रति अविश्वास कि वह मनमाने ढंग से करेंसी का अवमूल्यन कर सकती हैं अथवा स्वेच्छा से विमुद्रीकरण तक कर सकती हैं।
- सम्पत्ति का लम्बे अवधि तक संचय करने के लिए सुरक्षित परिसम्पत्तियों का अभाव।

3.4. क्रिप्टोकरेंसी के लाभ

- **निजता की सुरक्षा:** छद्मनामों का उपयोग किये जाने से पहचान, सूचना एवं लेन-देन के पक्षों का विवरण सुरक्षित रहता है।
- **लागत-प्रभावशीलता:** इलेक्ट्रॉनिक लेन-देन में शुल्क एवं प्रभार लगते हैं। जब लेन-देन अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर होता है तब करेंसी का रूपांतरण भी होता है, ऐसे में इनकी लागत और भी उच्च होती है। इन पर बैंकों, थर्ड पार्टी क्लियरेन्स हाउसेज एवं पेमेंट गेटवेज के द्वारा भी शुल्क लगाया जा सकता है। क्रिप्टोकरेंसी इस समस्या का समाधान प्रस्तुत करती हैं क्योंकि संपूर्ण विश्व में उनका मान एक ही होता है। साथ ही साथ इनमें लेन-देन शुल्क भी अत्यधिक कम होता है। यह लेनदेन राशि के मात्र 1% तक भी हो सकता है। क्रिप्टोकरेंसी थर्ड पार्टी क्लीयरेंस हाउसेस या गेटवेज को समाप्त कर देती हैं जिससे लागत में कटौती होती है और लगने वाले समय में कमी आती है।
- **प्रवेश बाधाओं में कमी:** अंतर्राष्ट्रीय उपयोग हेतु बैंक खाता या डेबिट/क्रेडिट कार्ड रखने के लिए आय, पता तथा पहचान के दस्तावेजी प्रमाणों की आवश्यकता होती है। क्रिप्टोकरेंसी इन प्रवेश बाधाओं को कम कर देती हैं। इनके उपयोगकर्ताओं में सम्मिलित होना निशुल्क होता है तथा उनकी उपयोगिता उच्च होती है। इसके उपयोगकर्ता को आय, पता या पहचान प्रकट करने या प्रमाण प्रस्तुत की आवश्यकता नहीं होती है।
- **बैंकिंग प्रणालियों और वैध मुद्रा (फ़िएट करेंसी) का विकल्प:** सरकारें बैंकिंग प्रणालियों, अंतरराष्ट्रीय धन अंतरणों तथा अपनी राष्ट्रीय करेंसी या मौद्रिक नीतियों पर कठोर नियंत्रण रखती हैं तथा विनियमन करती हैं। क्रिप्टो करेंसी उपयोगकर्ता को धन के विनिमय के ऐसे विश्वसनीय एवं सुरक्षित साधन प्रदान करती हैं जो राष्ट्रीयकृत या निजी बैंकिंग प्रणालियों से स्वतंत्र हों।
- **ओपेन सोर्स पद्धति तथा सार्वजनिक भागीदारी:** इनमें आम सहमति के आधार पर नीति निर्णय करने की पद्धति है, साथ ही गुणवत्ता नियंत्रण अंतर्निहित है तथा सेल्फ-पॉलिसिंग तंत्र विद्यमान है। इन्हीं के माध्यम से क्रिप्टो करेन्सीज के संचालन की कार्य प्रणालियां, प्रोटोकॉल और प्रक्रियाएं निर्मित होती हैं।
- **सरकार की दंडात्मक वित्तीय कार्यवाहियों से प्रतिरक्षा:** सरकारों के पास किसी बैंक खाते को सीज/फ्रीज़ करने का अधिकार एवं साधन होते हैं किन्तु क्रिप्टोकरेंसी के मामले में ऐसा करना अव्यवहार्य होता है। कुछ दमनकारी देशों में सरकारें आसानी से बैंक खाते फ्रीज या जब्त कर सकती हैं। क्रिप्टोकरेंसी ऐसे देशों के नागरिकों की इस प्रकार की कार्यवाही से रक्षा करती हैं।

3.5. क्रिप्टोकरेंसी से जुड़े जोखिम

- **की/वैलेट/एक्सचेंज सुरक्षा:** सुरक्षा की पूरी श्रृंखला में वैलेट तथा एक्सचेंज सबसे कमजोर कड़ियाँ हैं। आमतौर पर सुरक्षा पर आक्रमण इन्हीं बिन्दुओं पर होता है। 2014 में हैकर्स ने टोक्यो के माउंट गोक्स एक्सचेंज से बिटक्वाइन्स के रूप में लगभग 480 मिलियन अमरीकी डालर चुरा लिए।
- **क्रिप्टोकरेंसी प्रणाली की हाइजैकिंग/ राउटिंग अटैक/ डिस्ट्रीब्यूटेड डिनायल ऑफ़ सर्विस (DDoS) अटैक:** क्रिप्टोकरेंसी प्रणालियाँ खुली हुई प्रणालियाँ हैं तथा हाईजैकिंग या इंटरनेट राउटिंग अटैक के लिए सुभेद्य हैं। इसके साथ ही क्रिप्टोकरेंसी प्लेटफार्म्स पर DDoS अटैक करना भी आसान है। एक्सचेंजेस को लक्ष्य बनाकर किए गए इन आक्रमणों से सेवाओं की गति मंद हो सकती है अथवा

VISION IAS